Page No. 01
Date 18.05.20

Structuralism

Basic Concepts of Structuralism
(संरचनावाद की मूलभूत अवधारणाएँ):-

मनोविज्ञान में संरचनावाद या संरचनात्मक मनोविज्ञान, विल्हेम वुन्ट तथा एडवर्ड ब्रैडफोर्ड टिचनर द्वारा विकसित एक चेतना सिद्धान्त है। मनोविज्ञान को दर्शनशास्त्र से अलग करके वैज्ञानिक अध्ययन करने का श्रेय संरचनावाद को जाता है, जिसके प्रवर्तक विल्हेम वुण्ट (1832-1920) तथा ई.बी. टिचनर (1867-1927) थे। इन्होंने अमेरिका के कार्नेल विश्वविद्यालय में इसकी शुरुआत की। वुण्ट ने 1879 में लीपज़िग विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान की प्रथम प्रयोगशाला की स्थापना की और मनोविज्ञान के स्वरूप को प्रयोगात्मक बना दिया। वुण्ट ने मनोविज्ञान को चेतन अनुभूति का अध्ययन करने वाला माना, जिसे मूलतः दो तत्वों में विश्लेषित किया जा सकता था। ये दो तत्व थे- संवेदना तथा भाव। वुण्ट ने चेतना को वस्तुनिष्ठ (ऑब्जेक्टिव) तत्व बताया। वुण्ट का विचार था कि प्रत्येक भाव का अध्ययन तीन विमाओं में अवस्थित किया जा सकता है- उत्तेजना-शान्ति, तनाव-शिथिलन तथा सुखद-दुःखद। इसे भाव का त्रिविमीय सिद्धान्त कहा गया। टिचनर ने वुण्ट की विचारधारा को उन्नत बनाते हुए कहा कि चेतना के दो नहीं तीन तत्व होते हैं- संवेदना, प्रतिमा तथा अनुराग, टिचनर ने वुण्ट के समान अन्तर्निरीक्षण

Scanned with CamScanner

को मनोविज्ञान की एक प्रमुख विधि माना है। वुण्ट ने चेतना के तत्वों की दो विशेषताएं बतायी थी- गुण तथा तीव्रता। टिचनर ने इनकी संख्या चार की जो- गुण, तीव्रता, स्पष्टता तथा अवधि। टिचनर ने ध्यान, प्रत्यक्षण, साहचर्य, संवेदना आदि क्षेत्रों में भी अपना योगदान दिया।

एडविन बोरिंग के अनुसार संरचनावाद से संबंधित चार आम विचार एक 'व्यापक प्रवृत्ति' की रचना करते है –

* सबसे पहले, संरचना वह है जो प्रणाली के प्रत्येक तत्व की स्थिति को निर्धारित करता है।
* दूसरा, संरचनावादियों का मानना है कि हर प्रणाली की एक संरचना होती है।
* तीसरा, संरचनावादी 'संरचनात्मक' नियमों में ज्यादा रुचि रखते है जो बदलाव की जगह सह-अस्तित्व से संबंधित होते है।
* और आखिर में संरचनाएं वे 'असली वस्तुएं' है जो अर्थ के धरातल या सतह के नीचे विद्यमान रहती है।

Contribution of wundt :

[signature] 18/04/20
Dr. A. K. Seman
Asst. Prof.
Dept of Psychology
Marwari College, Darbhanga

Scanned with CamScanner

प्रयोगों (Experiments) को प्रोत्साहन दिया। वुण्ट ने स्वयं भी बहुत से प्रयोग किये और विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि उसके सभी प्रयोग वैज्ञानिक थे।

प्रारम्भिक जीवन और शिक्षा—विलहेल्म वुण्ट (Wilhelm Wundt) का जन्म नेकारन (Neckaran) नामक स्थान में सन् 1832 में हुआ। उसकी प्रारम्भिक शिक्षा एक पादरी की देख-रेख में हुई। बाद में उसने टुबिन्जन (Tubingen) यूनिवर्सिटी में चिकित्साशास्त्र (Medicine) का अध्ययन किया। इसके बाद वह हाइडलबर्ग (Heidelberg) यूनिवर्सिटी में चला गया और वहाँ पर शरीर-विज्ञान (Physiology) का अध्ययन किया। सन् 1856 में वह बर्लिन चला गया और वहाँ पर शरीर विज्ञान का और अधिक अध्ययन किया। यहीं पर वुण्ट ने मुलर (Muller) की देख-रेख में शरीर-विज्ञान का प्रयोगात्मक और विस्तृत अध्ययन किया। उन दिनों मुलर सबसे बड़े शरीर वैज्ञानिक के रूप में प्रसिद्ध थे। वुण्ट ने मुलर से बहुत कुछ सीखा। Contribution of Wundt

वुण्ट का मनोविज्ञान में योगदान

1. मनोविज्ञान का स्वरूप निर्धारण—वुण्ट ने मनोविज्ञान के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिये इसके विभिन्न विषयों को एक क्रमिक विकास में जोड़ा और साथ ही साथ इन विषयों को भी स्पष्ट किया। अन्य शब्दों में उसने मनोविज्ञान को व्यवस्थित मनोविज्ञान (Systematic Psychology) बना दिया और इस प्रकार मनोविज्ञान के विद्यार्थियों के लिये इसका अध्ययन सुगम कर दिया।

2. संवेदन (Sensation)—वुण्ट ने संवेदन, प्रत्यक्ष ज्ञान व प्रत्यय आदि मानसिक क्रियाओं का विवेचन किया। उसके इस विवेचन का आधार प्रयोगात्मक था। उसने बतलाया कि संवेदन के विकास में स्नायु मण्डल और ज्ञानेन्द्रियों का क्या भाग है। उसने संवेदन तथा भावना को मन का आवश्यक तत्व माना है। उसने संवेदन की व्याख्या करते हुए गहनता (Intensity) गुण (Quality), विस्तार (Extent) और अवधि (Duration) का वर्णन किया है। संवेदन के स्वरूप में गहनता के बारे में उसने विभिन्न मनोभौतिकी (Psycho-Physics) प्रयोग किये और उन्हीं के आधार पर इसका वर्णन किया। व्याख्या करते हुए उसने संवेदन के सामान्य स्वरूप पर प्रकाश डाला। विस्तार और अवधि के सम्बन्ध में उसने प्रत्यक्ष ज्ञान को आधार बनाया।

3. भावना (Feeling)—वण्ट के अनुसार भावना के तीन आयाम (Dimensions) होते हैं। भावना का प्रथम आयाम सुखकर (Pleasant) असुखकर (Unpleasant) है। अन्य शब्दों में, भावना के प्रथम आयाम के एक सिरे पर सुखकर भावना पायी जाती है और दूसरे सिरे पर असुखकर भावना पाई जाती है। इस प्रकार दोनों सिरे एक दूसरे से बिल्कुल विपरीत होते हैं। दूसरे आयाम के एक छोर पर शान्ति (Peace) और दूसरे छोर पर इसके विपरीत उत्तेजना (Exoitement)

Scanned with CamScanner

पाई जाती है। इसी प्रकार तीसरे आयाम में विश्राम (Rest) और तनाव (Tension) पाये जाते हैं।

वुण्ट के अनुसार भावना और संवेग का विकास स्नायु-मण्डल से सम्बन्धित है। अन्य शब्दों में भावना और संवेग की उत्पत्ति में शारीरिक परिवर्तन होते हैं। जब व्यक्ति में संवेग उत्पन्न होते हैं तो उसके शरीर में कुछ विशेष प्रकार की प्रतिक्रियायें होती हैं। किसी क्रिया की ओर व्यक्ति को अग्रसर करने में भाव ही कारण होते हैं

वुण्ट ने प्रयोगों द्वारा यह पता लगाया कि सुखकर भावना के समय शान्ति और विश्राम की भी अनुभूति होती है। इसके विपरीत असुखकर भावना में उत्तेजना और तनाव भी सम्मिलित रहते हैं। इस प्रकार किसी भावना की उत्पत्ति के समय भावना की इन छः प्रकार की मानसिक दशाओं में से तीन का होना आवश्यक है। वुण्ट का यह तथ्य त्रि-आयाम भावना (Tri-dimensional feeling) सिद्धान्त के नाम से विख्यात है।

4. प्रत्यय (Concepts)—वुण्ट के अनुसार प्रत्यय का सम्बन्ध प्रत्यक्ष ज्ञान से होता है। प्रत्यक्ष ज्ञान के स्वरूप के विषय में उसने बतलाया कि भाव, संवेदनाओं तथा स्मृतियों (Memories) का सम्मिलित रूप है। प्रत्यक्ष ज्ञान से ही प्रत्यय और विचार उत्पन्न होते हैं।

वुण्ट ने प्रत्ययों और विचारों का उनके गुणों के आधार पर वर्गीकरण किया है। इस वर्गीकरण के अनुसार प्रत्यय के तीन प्रकार हैं—

1. गहन प्रत्यय (Intensive Ideas)—गहन प्रत्यय के विषय में वुण्ट ने यह बतलाया कि इसका विकास उस समय होता है, जबकि प्रत्यय समता (Consonance) और अवरोध के आधार पर संगठित होते हैं। वुण्ट के अनुसार गहन प्रत्यय का सम्बन्ध ऐसी ध्वनियों और विचारों से है जिनमें समता और विषमता (Dissonance) पाई जाती हैं। प्रत्ययों की गहनता उनके स्वरूप में एकता के कारण होती है। विरोधी प्रत्यय का एक साथ मिलकर गहन नहीं हो सकते।

2. देश प्रत्यय (Space Ideas)—इनके विषय में वुण्ट ने लिखा है कि ये वे प्रत्यय होते हैं जोकि देश से सम्बन्धित होते हैं।

3. काल प्रत्यय (Time Ideas)—वे प्रत्यय होते हैं जो कि काल से सम्बन्धित होते हैं। व्यक्ति ज्यों-ज्यों अपनी शारीरिक गतियों के आधार पर अनुभव अर्जित करता जाता है उसी दर से काल व देश प्रत्यय बढ़ते जाते हैं। किसी कार्य में कितना समय लगेगा इसका ज्ञान काल प्रत्यय से होता है और इसी प्रकार एक स्थान से दूसरे स्थान की दूरी का अनुमान देश प्रत्यय से लगता है।

5. संप्रत्यक्ष (Apperception)—वुण्ट ने संप्रत्यक्ष (Apperception) के बारे में बतलाया कि इसका सम्बन्ध मस्तिष्क के अगले भाग से होता है। संप्रत्यक्ष की क्रियायें नाड़ियों के योग से होती हैं सुप्रत्यक्ष के विकास में साहचर्य का भी प्रमुख

Scanned with CamScanner

भाग होता है। साहचर्य की अनुभूति नाड़ियों के माध्यम से मस्तिष्क तक जाती है और फिर वहीं प्रत्यक्ष का विकास होता है। व्यक्ति के संवेदन साहचर्य के आधार पर ही अर्थ रखते हैं। इन्हीं से संप्रत्यक्ष का विकास होता है। अनुस्मरण (Remembering) की क्रियाओं में भी साहचर्य (Association) व संप्रत्यक्ष दोनों का योग होता है। साहचर्य के आधार पर प्रत्ययों (Ideas) तथा विचारों का विकास होता है और फिर उन्हीं के आधार पर अनुस्मरण की क्रिया होती है जब अनुस्मरण के लिये कोई विशेष तथ्य या विचार की आवश्यकता होती है तब उसके चुनाव में साहचर्य व संप्रत्यक्ष दोनों ही सहायक होते हैं। इस विषय में यह कहना भी उचित ही होगा कि अनुस्मरण क्रिया में यदि साहचर्य और संप्रत्यक्ष का सहयोग न हो तो एक ही स्मृति (Memory) में बहुत से विचार आ जायेंगे और निश्चय करना कठिन हो जायेगा कि किस परिस्थिति में किस प्रत्यय की आवश्यकता थी।

6 मानसिक क्रियाओं का शारीरिक आधार—यह तो स्पष्ट ही है कि वुण्ट ने शारीरिक आधार पर मानसिक क्रियाओं का अध्ययन किया किन्तु उसने यह भी स्पष्ट किया कि मन तथा शरीर की क्रियाओं में एक दूसरे की इस प्रकार की निर्भरता नहीं होती कि उन पर पृथक्-पृथक् विचार ही न किया जा सके। वुण्ट ने माना है कि मन तथा शरीर विशिष्ट होते हैं तथापि वे परस्पर घनिष्ठ होते हैं। अन्य शब्दों में मन तथा शरीर एक दूसरे से समानान्तर (Parallel) होते हैं। किन्तु इनमें परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध किस प्रकार होता है, इसको वुण्ट ने स्पष्ट नहीं किया है।

7. प्रयोगात्मक मनोविज्ञान पर बल—मनोविज्ञान में ही वुण्ट ने प्रयोगात्मक मनोविज्ञान पर बहुत बल दिया। अपने प्रयोगों के लिये उसने उन विषयों को ही चुना जिनके सम्बन्ध में अधिक विवरण उपलब्ध न था। चाक्षुष तथा श्रवण संवेदनाओं के अतिरिक्त अन्य ज्ञानेन्द्रियों का प्रयोगात्मक अध्ययन करने का श्रेय भी वुण्ट को प्राप्त है। उसने शारीरिक प्रतिक्रिया के समय निर्धारण के लिये भी प्रयोग किया। उसने यह ज्ञात किया कि उद्दीपन होने पर उससे सम्बन्धित प्रतिक्रिया को कितना समय लगता है। इस प्रकार वुण्ट के प्रयोगों से मनोभौतिकी (Psychophysics) को बल मिला। उसने साहचर्य व संप्रत्यक्ष का भी अध्ययन किया।

8. प्रयोगात्मक प्रणाली—मनोविज्ञान में वुण्ट की सबसे बड़ी देन उसकी मनोविज्ञान के अध्ययन की पद्धति है। वास्तव में प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का आरम्भ ही वुण्ट ने किया। वुण्ट से पहले भी मनोवैज्ञानिकों ने समय-समय पर मनोविज्ञान के वैज्ञानिक अध्ययन के बारे में लिखा था किन्तु वुण्ट ने ही इसे कार्य रूप में परिणत किया। उसने प्रयोगशाला में प्रयोग करके बहुत से तथ्यों का पता लगाया। यह भी स्मरणीय है कि वुण्ट ने ही विश्व की सर्वप्रथम मनोविज्ञान प्रयोगशाला स्थापित की।

Scanned with CamScanner